पर्यावरण और गाँधी दर्शन

डॉ0 अजय कुमार, अतिथि शिक्षक भूगोल विभाग जनता को कोशी कॉलेज, बिरौल, दरभंगा

परिचय

पर्यावरण या वातावरण 'वह आवरण है जिसमें जीव चारों तरफ से घिरा हुआ है और भौतिक तथा जैविक कारक उसे प्रभावित करते रहते है। यह स्थल, जल और वायुमण्डल से मिलकर बना होता है। जिसे जीवमंडल कहते हैं। रामचरित्र मानस में भी गोस्वामी तुलसीदास लिखे :

''छित, जल, पावक, गगन समीरा, पंचतत्व यह अधमशरीरा।''

जिस प्रकार मानव का परिधान वस्त्र है। उसी प्रकार पृथ्वी का परिधान वन और वनस्पति है। यह हमारा सुरक्षा कवच है। यह हमें स्वच्छ वायु, जल, हरियाली और भूमिगत जल स्तर को बनाये रखते हैं। जलवायु परिवर्तन को रोकते हैं और समय पर वर्षा बनाये रखते हैं जिससे कृषि का विकास संभव हैं। आज के भौतिक वादी संस्कृति ने पर्यावरण को बिनष्ट किया है। पर्यावरण की शुद्धता बिनष्ट होती जा रही है और वायु में कार्बणडाइआक्साइड की मात्रा प्रतिवर्ष बढ़ रही है। जो पृथ्वी पर मानव सहित सम्पूर्ण जीवों के लिए खतरें का संकेत हैं। यह तभी सुधर सकता है जब हम महात्मा गाँधी के वाक्य ''गाँवो की ओर लौटे।'' पर विचार करेंगे। भारत में शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है। वृक्ष काटकर नगर, उघोग, सडक, मानव आवास एवं सहयोगी सुविधाएँ के लिए भवन बनायी जा रही है। वृक्ष कटाई की तुलना में वृक्षारोपण कम होता जा रहा है। जहाँ पृथ्वी के एक–तिहाई भाग पर वन–वनस्पति होनी चाहिए। वह भारत में इसका प्रतिशत 20.67% है। अतः वन–वनस्पति की सुरक्षा वृक्षारोपण में वृद्धि करना अति आवश्यक है। इससे पर्यावरण संतुलन बना रहेगा। बाढ़, सुखार, भूमि कटाव, भूमि क्षरण, ताप–वृद्धि, भूमिगत जलस्तर बना रहेगा। ग्रीन हाउस प्रभाव, सुनानी लहरे, भूकम्प, महामारी, रसायनिक वर्षा, कुहरा–कुहासा, धूंध कार्बनडाइआक्साइड की मात्रा में वृद्धि रूकेगी। ओजोन परत में छिद्र, अल्ट्रावायलेट किरण का धरती तक आने से बढ़ रहे चर्मरोग, हृदय रोग, कैंसर रोग तथा बहुत से प्रजातियों का जलवायु परिवर्तन के कारण विलुप्त होने का खतरा कम होगा। आज हमारे यहाँ गिद्ध नहीं उतरती हैं। सदी के मौसम में साइबेरियन पक्षी आते थे वह नहीं आती है। विभिन्न तरह के रंग–बिरंगे पक्षी देखे जाते थे। आज विलुप्त हो गये हैं। ये बदलते मौसम का प्रभाव है। काले हिरण, गौड़ा, मृग, बाघ हाथी कम पड़ते जा रहे है। अतः प्राकृतिक समरसता को बनाये रखने पारिस्थितिक संतुलन को संतुलित रखने के लिए 'जियो और जीने दो' के बीच गाँधी के उस विचार को भी चरितार्थ करना होगा जिसमें उन्होंने गाँवों की संस्कृति, पर्यावरण, शिक्षा उन्नति के लिए बुनियादी शिक्षा की नींव रखी थी। चंपारण का भितरवा आश्रम इसका गवाह है। चारों तरफ हरियाली, चिड़ियों का चहक, मेधावरण के बीच प्राकृतिक सौन्दर्य में उत्तम शिक्षा शहरी चकाचौक को मात देने वाली थी। शिक्षा के साथ स्वरोजगार वह भी बुनियादी साधनों के आधार पर बच्चों को सिखाई जाती थी। जैसे–टोकड़ी बुनना, रस्सी बाँटना, कपड़ा बुनना, चरखा चलाना, अगरवती बनाना, पापड़ बनाना, दालबूट बनाना इत्यादि। लेकिन गाँधी के उस सपने – ''सपनों का भारत'' सुशहाल भारत, समृद्ध भारत को बढ़ते शहरी चकाचौक और राजनेताओं का गाँवो के विकास पर कम ध्यान देने से शहरों की ओर आकर्षण बढ़ा है। गाँव का सड़क अच्छी हो। नाला, स्वीवर, बिजली पानी, रोशनी, शौचालय, विघालय, अस्पताल खेल मैदान और यातायात–परिवहन साधन सुलभ हो। शहर से तीव्रगामी साधन के साथ जुड़ा हो। सुरक्षा के

साधन उपलब्ध हो तो शहर की नारकीय जीवन में रहने से कहीं अच्छा गाँव का जीवन है। जहाँ ''भारत की आत्मा बसती है।'' इसकी अपनी संस्कृति है – भाईचारा, धार्मिक समरसता, प्यार–मुहब्बत सहयोग की भारतीय भावना का सुन्दर उदाहरण गांव होता है। शहर के बिगरैल पर्यावरण के बीच रहने से कही अच्छा गाँव का जीवन है। यहाँ वर्षाकाल में पानी जम जाता है और पार करने में चर्मरोग का खतरा रहता है। फैक्ट्री की धुँआ श्वसन रोग लाती है। ध्वनि प्रदूषण से बहरापन बढ़ रहा है। हरितिमा के अभाव में आँखों की रोशनी जल्द चली जाती है। इसलिए वर्तमान परिपेक्ष्य में पर्यावरण के संदर्भ में गाँधी जी का दिया विचार काफी सारगर्मित है।

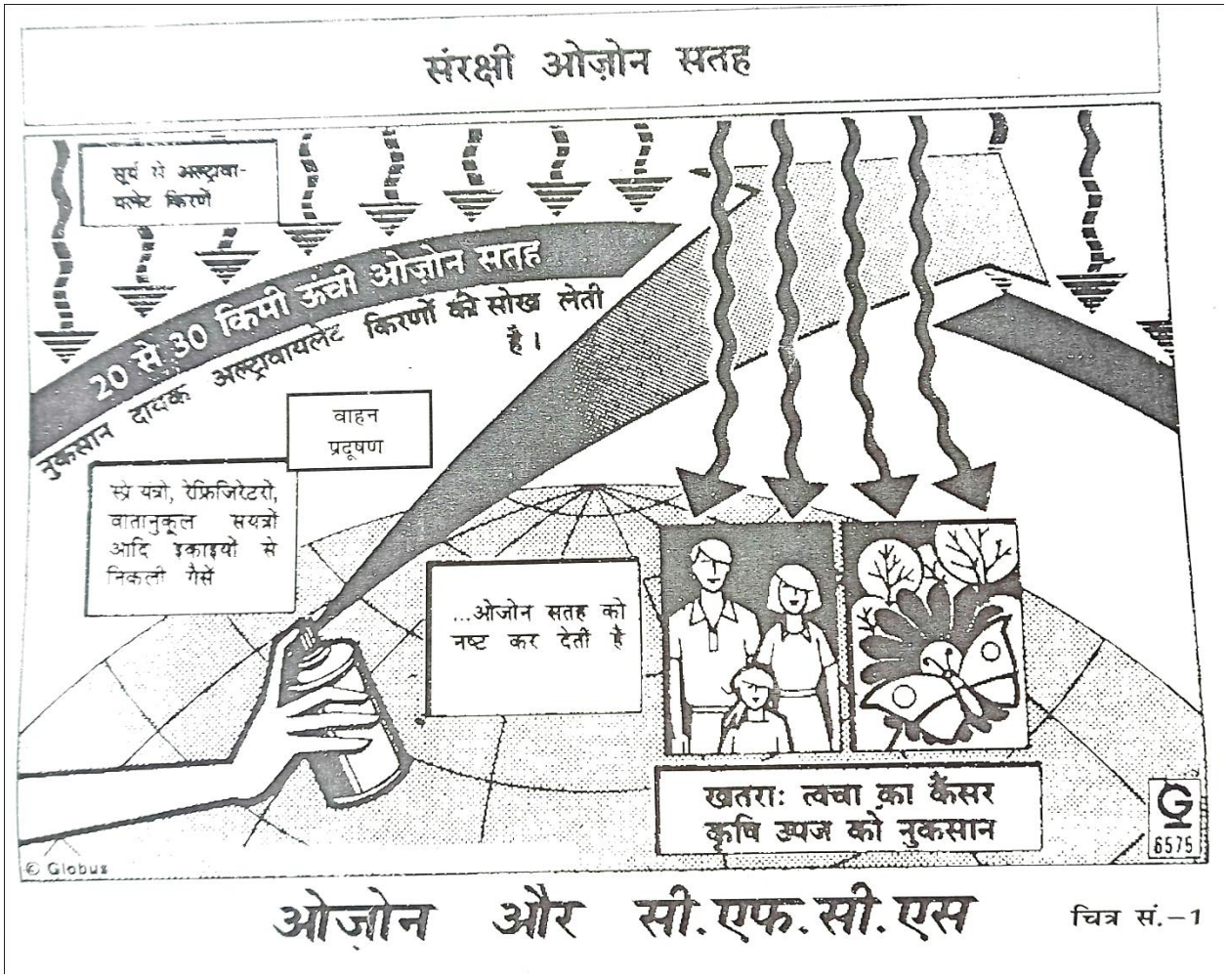

ओज़ोन और सी.एफ.सी.एस चित्र सं.–1

उद्देश्य

वर्तमान समय में पर्यावरण और गाँधी दर्शन के पर्यावरणीय विचार को बिहार के संदर्भ में देखना चाहेंगे। जहाँ हमारी सरकार बापु के दर्शन के आधार पर चंपारण के धरती से ''हरियाली कार्यक्रम'' की शुरूआत करते है और इसे भारत में सर्वप्रथम लागु कर गाँधी दर्शन और पर्यावरण पर उनकी सोंच पर खड़ा उतरने के लिए हम सब के सहयोग, जागृति की कामना करते हैं।

आँकड़ो का स्त्रोत

सरकार के आँकड़े बताते है कि बिहार के 7 प्रतिशत से कम भाग पर ही वन वनस्पति है। पूर्वी बिहार के कटिहार, किशनगंज, अररिया, पूर्णिया की भूमि तथा पश्चिमी बिहार की प0 चंपारण एवं पूर्वी चंपारण में ही वन मिलते है। शेष बिहार में निजी बगीचे, पेड़–पौधे सरकार द्वारा लगाये गये हैं जबकि बिहार के पास 18 प्रतिशत तक ऊर्सर, अनुपयुक्त कृषि योग्य भूमि, बंजर भूमि, ताल–तलैया,

बांध किनारा एवं सड़क के दोनो ओर सार्वजनिक स्थान पर वृक्षारोपण किया जाय और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाय तो हरियाली कार्यक्रम से बदलते जलवायु को रोका जा सकता है। बिहार के कृषि संसाधन को मजबुत किया जा सकता है। करौना संकट और लॉकडाउन से बदलते पर्यावरण, अच्छी वर्षा, हरियाली और कार्बन डाईआक्साइट में काफी कमी आयी है।

भोगौलिक परिदृश्य और अध्ययन क्षेत्र

उपग्रह से प्राप्त आँकड़े बताते है कि बिहार में प्राकृतिक वनस्पति का प्रतिशत राष्ट से काफी कम है। जिसमें उत्तर–पश्चिमी एवं पूर्वी बिहार ही अधिक समृद्ध है। शेष बिहार मैदानी है। जहाँ धनी आबादी मिलती है और वन–वनस्पति का अभाव है। यहाँ भी 17–18 प्रतिशत भूमि उर्सर, अनुपर्युक्त कृषि योग्य, बंजर भूमि, ताल–तलैया, बांध किनारा एवं सड़क की है जिसके किनारे पेड़–पौधा लगाकर हरियाली फैलायी जा सकती है। इनकी सुरक्षा वृक्षमित्र बहालकर की जा सकती हैं। प्रत्येक पंचायत को इससे जोड़कर हरियाली कार्यक्रम को सफल बनाया जा सकता है। स्वच्छ भारत और सफाई कार्यक्रम को गली मुहल्ला तक निरन्तर करते रहना चाहिए।

वर्तमान स्थिति

पर्यावरण प्रदूषण, सुरक्षा एवं प्रबन्धन के संदर्भ में बिहार की स्थिति अन्य राज्यों से भिन्न है। यहाँ कल कारखानें एवं फैक्ट्री की संख्या कम है। वृक्षों की सुरक्षा एवं प्रबन्धन के संदर्भ में वर्तमान बिहार सरकार का मुखिया भी नितिश कुमार काफी सजग है। वह गाँधी के कर्मभूमि चंपारण से वर्तमान 2019 में जल, जीवन और हरियाली कार्यक्रम निकालकर बिहार के हर कोने में जागरूकता अभियान चला रहे है। मानव श्रृंखला बना रहे है। जिसें नशा मुक्ति दहेज, बाल–विवाह के साथ–साथ जल, जीवन और हरियाली कार्यक्रम को शामिल कर जन–जन की आवाज पहुँचाकर जागरूक कर रहे है। मुफ्त में पौधा वितरण एवं परितोषिक पुरस्कार देकर कार्यक्रम को सफल बना रहे है। गांधी का सपना, समृद्ध गांव हो अपना। स्वच्छ और सुन्दर हरियाली लिए गाँव हो अपना। यानी स्वच्छ, निरोग, जीवन की कल्पना। योग और कर्म में विश्वास के साथ गांधी का दर्शन को चरितार्थ करने में लगे है ताकि आने वाले पीढ़ी को स्वच्छ हरियाली जल जीवन युक्त बिहार दे सके। यही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की भी सोच है। स्वच्छ, स्वस्थ्य, निरोग भारत उनका नारा है।

प्रमुख सदस्या

बिहार भारत का सर्वाधिक सधन घनत्व का राज्य है। यहाँ आवासीय भूमि के सर्वाधिक उपयोग से कृषि घट रही है। गैर कृषि कार्य भूमि प्रतिशत बढ़ रहा है। गहन खेती के प्रचलन एवं कीटनाशी दवाओं के उपयोग से तथा वन–वनस्पति के विनाश से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ा है। अम्लीय वर्षा, असमय मानसूम का आना, सुखार वर्षा की अनियमितता, अनिश्चितता, अतिवृष्टि, अनावृष्ट्रि से कृषि प्रभावित हुयी है। 1860 से 1960 के बीच वायुमंडल में 14 प्रतिशत कार्बन डाईक्साइड की मात्रा बढ़ी है। इसका मुख्य कारण वन–वनस्पति का हास है। वन–वनस्पति पोषण क्रम में कार्बन डाईक्साइड को सोखते है और ऑक्सीजन प्रदान करते है। यानी वायु का शुद्धिकरण होता रहता है। आज पृथ्वी ''गैसो का चेम्बर'' बनता जा रहा है और हरित गृह प्रभाव नष्ट होते जा रहे है। जिन्हें जीवित करने के लिए प्रान्तीय स्तर पर बिहार सरकार ''ग्रास रूट'' का कार्य कर रही है और जल–जीवन हरियाली योजना को जन–जन तक पहुँचा कर ''हरित बिहार–समृद्ध बिहार'' की कल्पना के साथ भारत सरकार के 20 सूची कार्यक्रम में शामिल वानिकी को गांधी दर्शन से जोड़कर मनरेगा के अधूरे कार्य पुरा कर रही है। क्योंकि बिहार के पांच प्रदूषित शहर–पटना, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, भागलपुर और नालंदा की रक्षा हरित बिहार बनाकर ही की जा सकती है।

आज बिहार में मनरेगा के तहद् 38 जिलो में 17–18 प्रतिशत भूमि पर वृक्ष लगाये गये है। जिसमें फलदार वृक्ष, कीमती लकड़ी के पेड़ सर्वाधिक लगाये गये है और सर्वप्रथम जिला स्तरीय पंचायती राज को इसकी जिम्मेदारी सौपी गयी थी। आज मनरेगा कार्यक्रम को बंद होते ही बिहार सरकार ने जल जीवन हरियाली कार्यक्रम चलाया है। इसके सार्थक परिणाम मिलने की आशा है। योजना का मुख्य लक्ष्य निम्न है।

1. वृक्षों की रक्षा, अपरिपक्व वृक्ष की सुरक्षा, देखभाल करना शामिल है।
2. अधिक वृक्ष लगाओ, इसके लिए निःशुल्क पौधा वितरण एवं पुरस्कार राशि की सरकारी व्यवस्था की गयी है जिससे अधिक किसान लाभांन्वित हो सके।
3. प्रबन्धन, सुरक्षा एवं समय पर सिचाई के लिए वृक्ष मित्र एवं प्रहरी बहाल करने की पंचातय स्तर पर जरूरत है।
4. पाँच वर्षो तक वृक्ष की सेवा कर जीवित रखने वाले सीमान्त किसान, जमींदार किसान सभी को प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत करने की जरूरत है। जरूरत पड़े तो वृक्ष पेंशन राशि योजना चलायी जानी चाहिए।
5. जन–जन तक स्कूल, महाविघालय में पर्यावरण शिक्षा का प्रचार–प्रसार होना चाहिए।
6. ग्रामीण आबादी में पंचायत स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम जल, जीवन एवं हरियाली के महत्व को समझना चाहिए।
7. प्राचीन भारतीय विघा, वृक्षपूजा, मानव पूजा से बेहतर है के महत्व को जन–जन तक पहुंचाना चाहिए।

निष्कर्ष

पृथ्वी का परिधान ही वन–वनस्पति है। यह मानव सहित सभी जीवो का सुरक्षा कवच है। जो पारिस्थितिक संकट से हमें बचा सकता है। जल–जीवन हरियाली से मानव सहित सम्पूर्ण जैव–जगत संतुलित बना रह सकता है। प्रकृति और मानव का सम्बन्ध सदियों पुराना है और एक दूसरे से अन्योन्याश्रित पूरक है। राष्ट्रपिता बापू का दर्शन और बुनियादी शिक्षा में पर्यावरण महत्व, सुरक्षा एवं वृक्षारोपण के अनवरत कर्य को दैनिक जीवन में समाहित किया गया है। जिसे अपनाकर ही हम खुशहाल भारत की कल्पना कर सकते है और गांधी के स्वच्छ, स्वस्थ्य प्रदूषण रहित। पर्यावरण में मानव जीवन के विकास को त्वरित गति दे सकते है।

शोध संदर्भ

1. दैनिक समाचार पत्र – दैनिक जागरण, हिन्दूस्तान, प्रभात खबर, दैनिक भास्कर से प्राप्त जानकारी।
2. सांख्यिकी विभाग, बिहार सरकार से प्राप्त रिपोर्ट।
3. के0डी0 सक्सेना : इन्भारमेन्ट प्लालिंग : पॉलिसी एण्ड प्रोग्राम इंडिया, शिप्रा पब्लिकेशन हाउस दिल्ली 1991
4. वार्षिक रिपोर्ट 1999–2019, वन एवं पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली 2019
5. धीरेन्द्र मजुमदार :– समग्र ग्राम सेवा की ओर –गांधी दर्शन पुस्तक से प्राप्त जानकारी।
6. गांधी के विचार – मोहनचंद करमचंद गांधी, सावरमती आश्रम, अहमदाबाद।
7. Census of India 2011, Bihar Series II Final Publication, Patna
8. Rao, B.P and R.B.P. Singh (1995) Bihar Ka Bahugolik Swarup, Basundhara Publication, Patna
9. Ahmed E-1965, Bihar-A Physical Economical and Regional Geography-Rachi
10. बिहार एक पस्विय – जियालाल आर्य जेनरल बुक एजेन्सी, पटना